

Contribution of sculptor Ram Vanji Sutar in the globalization of Indian art (भारतीय कला के वैश्वीकरण में मूर्तिकार राम वंजी सुतार का योगदान)

Anuj Mishra ^{a*}, Prasanna Patkar ^b

^a Research Scholar, Dept. of Fine Arts, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University, Satna, Madhya Pradesh, India

^b Head, Dept. of Fine Arts, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya University, Satna, Madhya Pradesh, India

^aEmail: artistajmishra98@gmail.com

Abstract

The history of Indian sculpture is very ancient in which different periods have given concrete form to historical, religious and cultural consciousness. Which has been glorious for the history of India, among the sculptors who have given recognition to sculpture at the global level in modern times, the name of Padma Bhushan decorated Ram Vanji Sutar is especially noteworthy. Sutar ji's life and his sculptures are excellent examples of Indian culture, nationalism and artistry.

Ram Vanji Sutar has raised the flag of Indian cultural philosophy and democratic values by installing the statues of great men like Mahatma Gandhi, Dr. Bhimrao Ambedkar Sardar, Vallabhbhai Patel, Subhash Chandra Bose, Pandit Jawaharlal Nehru etc. not only in India but also in western countries. The work created by him, "Statue of Unity", which is one of the tallest statues in the world, is a center of attraction not only in our India but also in western countries.

Sutar ji is famous for his realistic style. He has created magnificent life-size and non-life-size statues. In which the liveliness and expressions of rasa, bhaav, praman, depth and balance are fully reflected. And it is a medium to influence Indian culture. Sutar ji's sculpture has contributed significantly to the technical work, technical medium and social upliftment.

भारतीय मूर्तिकला का इतिहास अति प्राचीन रहा है जिसमें भिन्न-भिन्न काल खण्डों ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक चेतनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। जो भारत के इतिहास के लिए गौरवशाली रही है, आधुनिक काल में मूर्तिकला को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाले मूर्तिकारों में पद्मभूषण से अलंकृत राम वंजी सुतार का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सुतार जी का जीवन और उनके मुर्तिशिल्प भारतीय सांस्कृतिक, राष्ट्रवादी और कलात्मकता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

राम वंजी सुतार ने महात्मा गांधी, डॉ० भीमराव अम्बेडकर सरदार, वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस, पण्डित जवाहर लाल नेहरू आदि महापुरुषों की प्रतिमाओं को भारत में ही नहीं अपितु पश्चिमी देशों में स्थापित कर भारतीय संस्कृति का दर्शन और लोकतांत्रिक मूल्यों का परचम लहराया है। उनके द्वारा सृजित कृति "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जो कि विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमाओं में से एक है, जो केवल हमारे भारत में ही नहीं अपितु पश्चिमी देशों में भी आकर्षण का केन्द्र है।

सुतार जी यथार्थवादी शैली के लिए प्रसिद्ध है, इन्होंने अवाक्ष और आदम कद प्रतिमाओं का भव्य निर्माण किया है। जिसमें रस, भाव, प्रमाण, गहराई व संतुलन की सजीवता व अभिव्यक्तियां पूर्ण रूप से झलकती है। और भारतीय संस्कृति को प्रभावित करने का माध्यम है। सुतार जी की मूर्ति कला में तकनीकी कार्य तकनीकी माध्यम, और सामाजिक उन्नयन में अहम योगदान रहा है।

Keywords: Ram Vanji Sutar, Cultural Consciousness, Indian Sculpture, Statue of Unity, Global level.

राम वंजी सुतार, सांस्कृतिक चेतनाएं, भारतीय मूर्तिकला, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, वैश्विक स्तर

Received: 8/4/2025

Published: 8/24/2025

* Corresponding author.

प्रस्तावना

भारतीय कला अपने उदभव विकास से ही अपनी एक विशेष छाप छोड़ती चली आ रही है। जिसके कारण भारत सम्पूर्ण विश्व में अपनी संस्कृति मूर्तिकला चित्रकला व संगीत आदि कलाओं के लिए जानी जाती है। मूर्तिकला की इसी परम्परा को 20 वीं से 21 वीं सदी में विश्व स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने के लिए भारतीय मूर्तिकारों का विशेष योगदान रहा है जिन मूर्तिकारों में राम वंजी सुतार का नाम सर्वोपरि रहा है।

सुतार जी भारत के ही नहीं अपितु विश्व के प्रसिद्ध मूर्तिकारों में से एक है, आपने भारतीय मूर्तिशिल्पों को अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर प्रतिष्ठित करने का कठिन कार्य किया है। उन्होंने धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक व साहित्यिक विषयों को मूर्त रूप में सृजित कर भारत की ऐतिहासिकता को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है।

आप ने अपने कार्यों से अनेकों महापुरुषों को प्रतिमाओं के माध्यम से जीवंत करने का कार्य किया है। जिसके कारण आपको सदियों तक स्मरण किया जाएगा यह शोध पत्र उनके सम्पूर्ण जीवन के कार्यों, तकनीकी शैली व विश्व स्तर की उपलब्धियों तथा भारतीय सांस्कृतिक योगदानों की विशेषता प्रकट करती है।

जीवनी

मूर्तिकला के महासाधक पद्मभूषण से अलंकृत वरिष्ठ मूर्तिकार राम वंजी सुतार का जन्म “19 फरवरी सन् 1925 ई० को महाराष्ट्र प्रांत के धूलिया जिले के छोटे से गोन्दूर नामक ग्राम में सुतार परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम वंजी हंसराज सुतार था जो बड़ईगिरी का कार्य करते थे। इनकी माता का नाम सीता बाई था। सुतार जी के तीन भाई और चार बहन थी। इनके पुत्र का नाम अनिल सुतार है सुतार जी के पिता जब भी लकड़ी के औजार या सौंदर्यात्मक वस्तुएं बनाते थे तो पिता को विभिन्न कार्यों में संलग्न देखकर बालक राम वंजी सुतार का कला के प्रति रुझान बढ़ने लगा इस प्रकार धीरे- धीरे मिट्टी में खिलौने व मूर्तिशिल्प बनते रहते थे। उम्र के बढ़ते पड़ाव में मूर्ति शिल्प के प्रति अत्यधिक रुचि बढ़ती गई। शुरुआत से ही भारतीय महापुरुषों व धार्मिक परम्पराओं से अधिक लगाव होने कारण सदैव महान पुरुषों व क्रांतिकारियों को सृजित किया करते थे।

शिक्षा

सुतार जी का बचपन कला की ओर उन्मुख होने के कारण गांव के स्कूल से प्रारंभिक व इंटरमीडिएट की शिक्षा ग्रहण करने पश्चात अपने कला गुरु रामकृष्ण जोशी जी के परामर्श से कला स्नातक की शिक्षा प्राप्ति के लिए जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट मुंबई में दाखिला करवा लिए और वहीं से सुतार जी ने 5 वर्षीय स्नातक की उपाधि धारण की। संघर्ष साधना करते हुए स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात “सन् 1954 ई० में राम वंजी सुतार को एलोरा गांव के पास स्थित एलोरा गुफाओं में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग में नौकरी मिल गई। कुछ समय व्यतीत होने के उपरान्त उन्हें “प्रदर्शनियों के लिए तकनीकी सहायक के रूप में नियुक्त किया गया और सन् 1959 ई० में डी.ए.वी.पी.में शामिल हो गए।”2 यहीं से उनका औपचारिक मूर्ति कला की यात्रा आरम्भ किया।

राम वंजी सुतार का प्रतिमा दर्शन और शैली

यथार्थवादी

सुतार जी की मूर्ति कला यथार्थवादी शैली का प्रमुख उदाहरण है सूतार जी आवक्ष और आदमकद प्रतिमाओं के लिए प्रख्यात मूर्तिकारों में से एक जाने जाते हैं। इन्होंने अपने साक्षात्कार में चर्चा करते हुए बताए कि किसी भी मूर्ति का निर्माण करने से पहले उस व्यक्ति के विषय में बारीकी से अध्ययन करते हैं, ताकि उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके कि वो व्यक्ति कितना प्रातभाशाली किस प्रकार के विचारों का व्यक्ति है, जिससे मूर्ति में भाव- भंगिमाओं को उकेरना आसान हो जाता है। यही कारण है, किये अपनी प्रतिमाओं को यथार्थता से परिपूर्ण कर पाते हैं, जिससे प्रतिमाओं में सजीवता झलकती है। इनकी प्रतिमाओं में भाव-भंगिमाएं, वेश- भूषा व शारीरिक मुद्राओं में ऐतिहासिकता का पूर्ण रूप से अंकन देखने को मिलता है।

भारतीय पारंपरिक प्रतिमाएं

सुतार जी धार्मिक परम्पराओं और प्राचीन रीति रिवाजों के रहन सहन के व्यक्तित्व से अत्यधिक प्रभावित रहे हैं इसलिए इन के द्वारा सृजित प्रतिमाओं में अधिकांशता ईश्वरीय प्रतिमाओं के अतिरिक्त राजनेताओं, महापुरुषों व साधारण व्यक्तित्व वाले प्रतिमाओं को सृजित किये हैं, जो भारतीय इतिहास की प्राचीन संस्कृति को दर्शाती हैं। जैसे-

धार्मिक प्रतिमाएं

धार्मिक प्रतिमाओं का अनोखा संगम प्रस्तुत करने की चेष्टा की है।

गंगा - गंगा और यमुना में आदमकद की है, जिसमें सौम्यता और कोमलता का भाव दिखाया गया है।



आकृति 1 गंगा, यमुना की 6 फीट ऊंची प्रतिमाएं

चम्बल देवी - चंबल देवी की अति विशाल सीमेंट व कंक्रीट से निर्मित 45 फीट ऊंची प्रतिमा है, जो राजस्थान व मध्य प्रदेश की सीमा चंबल नदी के तट पर स्थित है। इस प्रतिमा को देखकर अनुभव होता है , कि ये अजंता की जीवंत प्रतिमा प्रतीत होती है। इसके अतिरिक्त त्रिमूर्ति, नंदी, कृष्ण अर्जुन संवाद इत्यादि ।

महापुरुषों की प्रतिमाएं - महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस, राजीव गांधी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय इत्यादि।

योद्धा प्रतिमाएं - छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराजा रंजीत सिंह, छत्रपति शाहूजी महाराज इत्यादि।

तकनीकी शैली - सुतार जी की स्वयं की विकसित शैली है। क्योंकि मूर्तिकला के प्रति इनकी दृष्टिकोण भिन्न है, जो एकदम अद्भुत, आकर्षक संरचनात्मक है, जो सभी मूर्तियों की अपेक्षा भिन्न है। इन्होंने यथार्थवादी शैली में कार्य को बड़े- बड़े उभारदार मिट्टी

के स्टोक लगाकर प्रतिमाओं को उकेरते हैं। वस्त्रों की सिलवटों के संरचनात्मक शैली अद्भुत और अनोखी है, गीली मिट्टी में कार्य करने में अधिक रुचि रखते हैं। सर्जन करते समय लम्बे समय तक परीक्षण करके प्रतिमाओं का अंकन करते हैं। यथार्थवादी प्रतिमाओं को स्वयं शैली से अपने मनोअभिव्यक्तियों को व्यक्त करते हैं।

माध्यम - राम वंजी सुतार ने कई प्रकार के माध्यमों का प्रयोग किए हैं। प्रतिमा का सांचा तैयार करने के लिए सीमेंट और प्लास्टर ऑफ पेरिस का प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त मार्बल पत्थर, फाइबरग्लास व कांस्य धातु से निर्मित अनेकों प्रतिमाओं का सृजन किए हैं, जो माध्यमों का संगम प्रतीत होता है, जिनकी भिन्न- भिन्न माध्यमों में ढलाई की जाती है

विशाल आकृतियां व अनुपात

सुतारजी ने अपने संपूर्ण जीवन काल में अनेकों प्रतिमाओं का सृजन किया जिसमें इन्होंने देवी देवताओं, महापुरुषों , योद्धाओं, साधारण व्यक्तियों और पशु पक्षियों की प्रतिमाओं को लघु आकार से लेकर विशाल आकार(1 फीट से लेकर 597 फीट तक की प्रतिमाओं को)तक की प्रतिमाओं को सृजित किए हैं। इनकी विशाल प्रतिमाओं में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी डॉ. भीमराव अम्बेडकर ,छत्रपति शिवाजी महाराज आदि विशाल प्रतिमाओं का निर्माण किये हैं ।

इनकी मूर्तियों के अनुपात बहुत ही सटीक और उच्चतम होते हैं। इनकी मूर्तियों में सम्पूर्ण शरीर का अनुपात इतना सटीक होता है, जिससे व्यक्तित्व का सटीक अनुभव किया जा सकता है। कि प्रतिमा का आकार कितना ही विशाल क्यों न हो मूर्ति संतुलन अवस्था में रहती है। इनके मूर्तियों के अनुपात का सर्वप्रमुख विषय यह होता है, की प्रतिमाओं की कद काठी देखकर अनुभव हो जाता है, की ये प्रतिमा किस व्यक्तित्व को दर्शाती रही है। उदाहरण के तौर पर इनके द्वारा सृजित महात्मा गांधी , पंडित जवाहर लाल नेहरू सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि प्रतिमाओं को देखकर व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाता है ।

प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रतिमाएँ

राष्ट्र से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक भारत की प्रतिमाओं को स्थान दिलाने वाले राम वंजी सुतार का महायोगदान रहा है। इनकी प्रमुख प्रतिमाओं में महात्मा गांधी की प्रतिमाएं, सरदार वल्लभ भाई पटेल व डॉ. भीमराव अम्बेडकर ये प्रतिमाएं प्रमुख रूप से पहचान और आकर्षण का केंद्र हैं। जो मूल रूप से अत्यधिक प्रभावी और आकर्षण का केंद्र रही हैं।



आकृति 2 चंबल देवी की 45 फीट ऊंची प्रतिमा

महात्मा गांधी की प्रतिमाएं - इनकी अत्यधिक लोकप्रिय और चर्चित प्रतिमाओं में महात्मा गांधी दो बच्चों के साथ गतिमान मुद्रा में, ध्यानस्थ, लाठी लेकर राह चलते हुए, चरखा चलाते हुए आदि जिसमें आवक्ष और आदमकद प्रतिमाओं में लघु और दीर्घ दोनों प्रकार की प्रतिमाओं का सृजन किया गया है, जो महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्यता के दर्शन को विश्व स्तर पर प्रस्तुत करती हैं। सुतार जी द्वारा निर्मित महात्मा गांधी की प्रतिमाएं अनेक देशों में प्रचुर मात्रा में स्थापित हैं। “फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, अर्जेंटीना, रूस, मलेशिया सहित लगभग 150 देशों में गाँधी जी की प्रतिमाएं स्थापित हैं। उनका निर्माण एक ही शिल्पकार ने किया है।”³



आकृति 3 महात्मा गांधी की प्रतिमाएं

स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा - स्वामी विवेकानन्द वैरागी के अलावा एक सिद्धांत हैं। सुतार जी ने विवेकानन्द जी को उस भारतीय महापुरुष की दृष्टिकोण से सृजित किये हैं, जो एक महत्वाकांक्षी और विद्वान व्यक्ति को दर्शाए। क्योंकि उनके भाव दृ भंगिमाओं और शारीरिक मुद्राओं में स्थिरता और आंतरिक मन में जागृति की उत्सुकता को प्रकट करती हैं। और इसी प्रतिमा के आधार पर भारत की आत्मा को पश्चिमी देशों तक पहुंचने की चेष्टा की है। सुतार जी का मानना है, कि स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा का निर्माण करते समय मूर्तिकार को केवल शारीरिक मुद्राओं को ही नहीं, अपितु मन की चेतनाओं और दृष्टि को जागृत कर मूर्त रूप प्रकट करने की चेष्टा करनी चाहिए। और यही कारण है, कि सुतार जी विवेकानन्द जी की प्रतिमा में उनके चेहरे की गंभीरता, आत्मविश्वास को झलकाने का पूर्ण रूप से प्रयास किया गया है। जिससे कि भविष्य में प्रतिमाएं सदैव ज्योतिवान प्रतीत होती रहे।



आकृति 4 चित्र 4 स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा

स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमाओं को विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों और अन्य प्रमुख स्थानों पर स्थापित करने चेष्टा की गई है। जिसे युवा पीढ़ी प्रेरणा का स्रोत मानते। “सुतार जी द्वारा सृजित स्वामी विवेकानन्द की 44 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा राँची में बूढ़ा तालाब के पास स्थित है।”⁴

छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा - छत्रपति शिवाजी महाराज को भारत के इतिहास में एक गौरव, आदर्श और हिंदूवाद का प्रेरणा स्रोत है। इनकी प्रतिमाओं का अत्यधिक सृजन भारतीय इतिहास के संघर्षकर्ता, आत्मसम्मान और वीर योद्धा के स्मरण करके प्रेरित होती रहे और भारत पर आंच आने पर अपने राष्ट्र और आत्मसम्मान की रक्षा कर सके इसी प्रतिमा के आधार पर इन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज की गाथाओं को प्रतिमाओं के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों को तक पहुंचाने की चेष्टा की है।

महाराष्ट्र प्रांत में सांस्कृतिक व सामाजिक निकायों द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमाओं को पूजनीय माना जाता है। इसलिए शिवाजी को घोड़े पर सवार वीर योद्धा की मुद्रा में सृजित किया जाता है। कला के माध्यम से इतिहास को जीवंत करने की भावना सुतार जी की प्रतिमाओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता जो सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संवाद का माध्यम बनाती है। क्योंकि ऐतिहासिक पात्रों को प्रतिमाओं के आधार पर प्रस्तुत कर उनके पराक्रम और विचारों को जनसामान्य तक पहुंचने की भूमिका निभाई है।

“कांस्य में सृजित 91 फीट की छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा दृ महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग मालवण में स्थित है।” 5



आकृति 5 छत्रपति शिवाजी महाराज की 91 फीट ऊँची प्रतिमा

छत्रपति शिवाजी महाराज 21 फीट कांस्ययुक्त प्रतिमा पुणे महाराष्ट्र में स्थापित है ।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा - डॉ. भीमराव अंबेडकर जी एक आदर्श, नई विचारधारा, व परिवर्तनकारी व्यक्तित्व के रूप में उभरकर दुनिया के समक्ष प्रस्तुत हुए, जो भारत के लोकतांत्रिक, न्याय और सामाजिक समरूपता का संकेत हैं। उन्होंने अम्बेडकर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रतिमा के माध्यम से उनके संघर्षों और विचारधाराओं को भाव और समर्पण के साथ मूर्त रूप में गढ़ने की चेष्टा की है।

लंदन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा का अनावरण भारत के संविधान की भावनाओं को विश्व स्तर तक पहुंचने में अहम भूमिका निभाई है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 18 फीट कांस्य युक्त प्रतिमा लखनऊ उत्तर प्रदेश में स्थापित है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी - स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, (सरदार वल्लभ भाई पटेल) प्रतिमा साधु बेट सरदार सरोवर बांध के निकट गरुणेश्वर बांध नर्मदा नदी गुजरात में 182 मीटर (597 फीट) कांस्य युक्त ऊंची प्रतिमा स्थापित है। यह भारत के इतिहास में कला के क्षेत्र के लिए अदभुत प्रतिमा का निर्माण हुआ है, ये नवीन शैली सांस्कृतिक व सामाजिक चेतनाओं को गौरवान्वित करने वाली प्रतिमा है। अपितु यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता का राजनैतिक प्रभाव ऐतिहासिक चेतना को और भी उच्चतम बनाती है। यह भारत के दृष्टिकोण से राष्ट्रवादी आत्माओं की आदि व्यक्तियों को मूर्त रूप प्रदान करती है। और वहीं पर पश्चिमी दृष्टिकोण से इनके सृजन शैली को भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों से अंकन किया गया है, जैसे- पर्यावरण, राजनीतिक, सामाजिक व स्मारकीय संस्कृतियों के परिप्रेक्ष्य से अंकन किया गया है।



आकृति 6 सरदार वल्लभ भाई पटेल की 597 फीट ऊँची प्रतिमा

वैश्विकता व राष्ट्रवादी सृजन की भावनाएं

एकता और अखंडता की भूमिका का निर्वहन करने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल (लौह पुरुष) जिस व्यक्ति ने लगभग 562 रियासतों को भारतीय गणराज्य को एकता के सूत्र में पिरोया है।⁶ जो भारतीय समाज के गौरवशाली व प्रतिभावान राजनेताओं में से एक थे इसलिए इस प्रतिमा के कारण भारत की एकता और अखंडता का परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराया है। यह प्रतिमा भारतवासियों के लिए बहुत ही गर्व का विषय है, जो स्वाभिमान और आत्म सम्मान का स्रोत है। सुतार जी ने भारत की सर्वश्रेष्ठ ऊँची प्रतिमा का निर्माण कर दुनिया को भारतीय कला संस्कृति का परचम लहराया है, जो भारत के लिए युगों-युगों तक के लिए इतिहास बन गया है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत की ऐतिहासिक कला तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवादी चेतनाओं का प्रतीक बन गई है।

इस प्रतिमा ने भारत को विश्व स्तर के स्मारकीय कला के क्षेत्र में इतिहास बना दिया है।

मूर्तिकार के परिप्रेक्ष्य से

इनकी दृष्टि में कला एक साधना है, जितना कठिन साधना उतना ही सरल परिणाम क्योंकि हीरा को चमकने के लिए अग्नि में तपना पड़ता है। कलाकार को निरंतर नवीन कलात्मक पक्षों का सृजन कर सीखना चाहिए। सुतार जी ने स्वयं कहा है “चलती का नाम गाड़ी है” अर्थात् जिस दिन गाड़ी चलना बंद हो जाएगी उसी दिन धीरे - धीरे करके सब खत्म हो जाएगा ।

सुतार जी का कहना है - यह केवल विशाल प्रतिमा ही नहीं यह भारतीय राष्ट्र की आत्मा है। ये परियोजना उनके जीवन की सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण कला-साधना मानी जाती है। उनका हमेशा से मनाना रहा है, की “किसी व्यक्ति की पहचान उसके पहनने या खाने से नहीं बल्कि उसके काम से होती है।”⁷

भारतीय संस्कृति में योगदान

सुतार, जी ने भारतीय इतिहास में मूर्तिकला को अमर करने की चेष्टा कर देश को प्रतिमाओं में धार्मिक, देशभक्त व अन्य साधारण व्यक्तियों का अनूठा संगम प्रदान कर भारत के इतिहास में महायोगदान दिया है। क्योंकि इनकी प्रतिमाएं भारत में “सॉफ्ट पावर” जो भारतीय विचारों, मूल रूप में प्रतिष्ठित करती है, और ऐतिहासिकता को विश्व के समक्ष मूर्त रूप में प्रकट करती है। इन सभी प्रतिमाओं को संजोकर अमूल्य धरोहर के रूप में संग्रहित किया जाए ।

इनके योगदानों में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, इतिहास में महायोगदान चंबल देवी, छत्रपति शिवाजी महाराज, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी आदि ये सभी प्रतिमाएं भारतीय सांस्कृति के हैं। जिनको किसी भी प्रदर्शनियों या कला संगठनों में उपहार स्वरूप राजनेताओं की प्रतिमाओं को भेंट किया जाता है, जिससे भारत की छवि विश्व स्तर तक प्रसिद्ध हो सके क्योंकि यही प्रतिमाएं चर्चा का विषय बनती है, जो भाषा रहित होकर भी अत्यधिक प्रभावित करने वाली होती है। इन्हीं प्रतिमाओं के कारण भारत की संस्कृति और सुतार जी की कला को युगों-युगों तक स्मरण किया जाता रहेगा ।

संग्रहालय

सुतार जी की प्रतिमाओं का एकत्रित संग्रहालय स्वयं की कार्यशाला है, जहां पर मिट्टी के निर्माण से लेकर कांस्य युक्त लघु प्रतिमाओं से लेकर विशाल प्रतिमाओं तक का अद्भुत और अनोखा संग्रह है। क्योंकि इनके द्वारा सृजित प्रतिमाएं भारत के अनेकों स्थानों व संगठनों में संग्रहालयों में देखा जा सकता है, जैसे नई दिल्ली का संसद भवन, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का

प्रांगण, उनके स्वयं की कार्यशाला इन सभी स्थान पर इनके मूर्तिशिल्पों को देखा जा सकता है। इस प्रकार भविष्य में विभिन्न स्थानों में संग्रहित मूर्तिशिल्पों को एकत्रित कर एक भव्य संग्रहालय का निर्माण किया जा सकता है।



आकृति 7 कार्यशाला में संग्रहित प्रतिमाएं

डॉ भीमराव अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में दिल्ली में संग्रहित भारत के सांसद परिसर नई दिल्ली में संग्रहित हैं।

राम सुतार फाइन आर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-2, सेक्टर-19, गौतम बुद्ध नगर, नोएडा-201301 (उ.प्र.), भारत।

राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार

शिल्पकार राम वंजी सुतार जी का सम्मान के प्रति दृष्टि बहुत ही साधारण और आध्यात्मिक हैं। इन्होंने कला को गहन साधना माना है, और पुरस्कार को साधना का परिणाम।

पद्मश्री सन 1999 ई०, पद्मभूषण सन 2016 ई०, टैगोर पुरस्कार सन 2016 ई०, महाराष्ट्र भूषण रत्न 2024 ई०, मंगोलिया का “द आर्डर ऑफ पोल स्टार” पुरस्कार।

फ्रांस के इकोले सुपीरियर रॉबर्ट डी सोरबोन विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की।

स्टेच्यू ऑफ प्रॉस्पेरीटी के लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज।

विशेषताएं

राम वंजी सुतार अति सूक्ष्म व विशाल यथार्थवादी मूर्तिकारों में से एक हैं, ये प्रतिमाओं को सृजित करते समय अत्यधिक गोली मिट्टी का प्रयोग करते हैं, जिससे कि मन में उठ रहे विचारों को आसानी से उकेरा जा सके। इन्होंने अपने साक्षात्कार में स्वयं के अनुभवों को साझा किए कि मैं प्रतिमा को इस प्रकार से गढ़ता हूँ, की प्रतिमा में दूर से भी दृष्टि पड़ने पर प्रतिमा का व्यक्तित्व झलकने लगे। इनकी प्रतिमाएं इतनी सजीव प्रतीत होती हैं, कि देखने वाला व्यक्ति एक क्षण के लिए समय और स्थान भूल जाता है।



आकृति 8 डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा

सरदार वल्लभ भाई पटेल जिसको स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के नाम से जाना जाता है, उस प्रतिमा में इन्होंने प्राण फुके हैं। उनकी ढाल चाल, चेहरे की भाव-भंगिमाओं और वस्त्रों की सलवटों को अद्भुत और अतुलनीय सृजित किए हैं। जो यथार्थता धारण किए हुए हैं, उदाहरण महात्मा गांधी ध्यानस्थ मुद्रा में, जो एक अहिंसा, शांति और विचारधारा का संकेत है, और उस प्रतिमा का अवलोकन करने वाले व्यक्ति में उसी प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं।

जैसे डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा संविधान की पुस्तक पकड़ने की मुद्रा, केवल पुस्तक ही नहीं अपितु समानता, न्याय और अधिकार का संकेत प्रकट करती है जो सुतार जी की प्रतिमाओं में इतनी सजीव प्रतीत होती हैं।

राष्ट्रीय गौरव का भाव

उनकी हर प्रतिमाओं में एक राष्ट्रियता की भावना समाहित रहती है। मूर्ति केवल व्यक्तित्व को नहीं दर्शाती, बल्कि उसके विचार, योगदान और आदर्शों को भी दर्शाती है। जैसे भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा में संविधान की पुस्तक पकड़ने की मुद्रा, महात्मा गांधी दो बच्चों के साथ गतिमान अवस्था में, सरदार वल्लभ भाई पटेल, चंबल देवी की आदि की प्रतिमाएं राष्ट्रीय गौरव का भाव प्रकट करती हैं।

निष्कर्ष

राम वंजी सुतार एक मूर्तिकार ही नहीं हैं, अपितु भारत की आत्मा को सौंदर्यात्मकता से गढ़ने वाले सुप्रसिद्ध कलाकार हैं। उनके योगदानों ने भारतीय मूर्तिकला को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाई। उनकी प्रतिमाएं आध्यात्मिक विचारों और सांस्कृतिक चर्चाओं और राष्ट्रीय चेतनाओं को प्रस्तुत करती हैं।

सुतार जी ने अपने मूर्तिशिल्पों से विश्व स्तर पर यह साबित कर दिखाया कि भारत की मूर्तिकला मात्र मंदिरों तक ही सीमित नहीं अपितु विश्व स्तर पर चर्चा का विषय बनाई जा सकती है। वे भारतीय मूर्तिशिल्प के पारम्परिक वाहक ही नहीं अपितु विश्व स्तर के कला साधक हैं। सुतार जी के जीवन से कला साधना को बहुत ही सूक्ष्मता से ग्रहण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Sutar, A. R. (2010). Sculptor Ram V. Sutar: A Life Story. Ram Sutar Fine Arts Pvt. Ltd., A-2, Sector-19, Gautam Budh Nagar, Noida 201301 (U.P.), India. P. 39. 1/238.2
2. राणा, गीता. (2010). कला साधक पद्मश्री राम वी. सुतार की कला साधना: एक समग्र अध्ययन, चित्रकला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, पृष्ठ सं. 39
3. Jharkhand State News. (n.d.). Vivekananda's 33 feet tall bronze statue to be installed at Ranchi Lake. Jharkhand State News. <https://jharkhandstatenews.com>.4
4. Times of India. (2024, March 1). 91 ft tall Shivaji statue unveiled at Rajkot fort sans pomp & pageantry. <https://timesofindia.indiatimes.com/city/mumbai/91Ft-Tell-Shivaji-Statue-Unveiled-at-rajkot-Fort-sans-pomp-pageantry/articleshow/121084896.cms>.5
5. Wikipedia contributors. (n.d.). "Statue of Unity". Wikipedia. Retrieved July 23, 2025, from P. P.6
6. Sutar, A. R. (2010). "Sculptor Ram V. Sutar: A life story". Ram Sutar Fine Arts Ltd.
7. The Better India Hindi. (2020, जुलाई 15). राम सुतार: वो कलाकार जिसने भारत को स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दिया <https://hindi.thebetterindia.com/ram-sutar-biography/>.7